Lecture Notes
Part III

B.A Part III
Paper VI

Topic –

Dumb & Children with other speech Defects.

गूँगे तथा अन्य भाषा-दोष वाले बालक

Dr. Kumari Sadhana Prasad
Associate Prof.
Dept. of Psychology

गूँगे तथा अन्य भाषा-दोष वाले बालक (Dumb & Children with other Speech Defects) :—

कुछ बालक जन्म से ही गूँगे होते हैं। ऐसे बालक प्रायः बहरे भी होते हैं। इसके अतिरिक्त भाषा-दोष के कई अन्य प्रकार हैं जैसे — तुतलाना (Stammering), हकलाना (Stuttering), स्वर संबंधी दोष (Phonetry defects), नाकिया कर बोलना (Nasal voice) आदि। इस संबंध में किए गए अनुसंधानों से पता चलता है कि इन में अधिकांश दोष अर्जित (acquired) हैं।

(i) गूँगे बालकों की शिक्षा —

गूँगे बालकों की समुचित शिक्षा के लिए एक राजकीय निवासीय स्कूल (State residential school) की स्थापना होनी चाहिए। उनके लिए विशेष प्रकार के पाठ्यक्रम की व्यवस्था होनी चाहिए। इन्हें ऐसा काम सिखाया जाए जिनमें पढ़ने या बोलने की आवश्यकता कम हो। उनकी मानसिक योग्यता एवं अभिरुचि के अनुसार उन्हें लकड़ी तथा मिट्टी का सामान बनाना, सिलाई करना, बुनाई करना आदि क्रियात्मक कार्य सिखलाए जा सकते हैं।

जन्मजात गूँगे प्रायः बहरे भी होते हैं। अतः ऐसे बालकों की शिक्षा की व्यवस्था उनके बहरापन को ध्यान में रख कर करना चाहिए। बहरे बालकों की शिक्षा कैसे हो, इसका उचित व्यवस्था होनी चाहिए।

हमारे देश में इस प्रकार के राजकीय आवासीय स्कूल कई राज्यों में कायम किए गए हैं जहाँ गूँगे बालकों को शिक्षित करके इस योग्य बना दिया जाता है कि वे अपनी जीविका का उपार्जन स्वयं कर सकें।

(ii) तुतलाना, हकलाना तथा नकियाने वाले बालकों की शिक्षा तथा उन का अभियोजन —

इस संदर्भ में किए गए अनुसंधानों के आधार पर शिक्षाविशेषज्ञों एवं मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे बालकों की शिक्षा एवं अभियोजन के लिए निम्नलिखित उपायों की सिफारिश की है —

(i) शिक्षकों को विभिन्न भाषा त्रुटियों का ज्ञान होना चाहिए ताकि वे समझ सकें कि अमुक बालक किस प्रकार के भाषा-दोष से पीड़ित हैं। इस ज्ञान के साथ शिक्षक ऐसे बालकों को सही परामर्श दें तथा उचित प्रबन्ध करने में समर्थ होते हैं।

(ii) ऐसे बालकों की शिक्षा की व्यवस्था एक अलग विशिष्ट स्कूल में होनी चाहिए। स्कूल में बालकों को रहने का प्रबन्ध हो तो और भी अच्छा है। 4-5 साल की आयु में इनका प्रवेश किसी स्कूल में कर देना चाहिए। बाद में इन्हें सामान्य बालकों के साथ पब्लिक स्कूल में प्रवेश मिलना चाहिए ताकि वे सामान्य बालकों के साथ अभियोजित होना सीख सकें।

अलग स्कूल के प्रबन्ध से बालकों को कई तरह के लाभ पहुँचते हैं। बालकों में हीनता का भाव उत्पन्न नहीं होता है। विशिष्ट प्रकार के पाठ्यक्रम को लागू करने में आसानी होती है। शिक्षक बालकों पर वैयक्तिक रूप से ध्यान दे पाते हैं। शिक्षक का यह उत्तरदायित्व है कि वे बालकों से बातचीत करें तथा गलत उच्चारण करने पर उसे शुद्ध करने का प्रयास करें। वस्तुतः यह कार्य बड़ा कठिन है। इसके लिए पहले शिक्षक को प्रशिक्षण (training) लेना चाहिए।

(iii) भाषा विशेषज्ञ तथा मनोवैज्ञानिकों की एक कमिटी बना ली जाय जो प्रदर्शन (demonstration) द्वारा बालकों को ठीक-ठीक उच्चारण करना सिखा सके। होंठ, जुबान तथा साँस पर किस प्रकार नियंत्रण (control) करके बोलना चाहिए यह कला बालकों को बतलाया जाना चाहिए। इसके लिए पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। अतः शिक्षकों को पहले इन पुस्तकों का अध्ययन कर लेना चाहिए ताकि वे अपने विद्यार्थियों के साथ न्याय कर सकें।

(iv) भाषा सुधार पद्धति (Speech Correction devices) का उपयोग यथासंभव होना चाहिए। इन में एक सरल पद्धति यह है कि सप्ताह में एक बार भाषा दोष से पीड़ित बालकों को एक शान्त लेकिन आनन्दप्रद (cheerful) कमरा में लाया जाता है। कमरा में छोटी-छोटी रोचक वस्तुएँ रहती हैं, जिनके सम्बन्ध में बालकों को कुछ बोलने के लिए कहा जाता है। कभी तो अकेले और कभी कई बालकों के साथ एक समूह में बोलना पड़ता है। इससे बालकों की भाषा एक बड़ी हद तक सुधर जाती है और उनकी शिक्षा सहज होने लगती है।

इस सम्बन्ध में Butts & Mentzum (मेन्टलन) के अध्ययन बड़े महत्वपूर्ण हैं। उनके अनुसार ऐसे बहरे बालकों की समुचित शिक्षा एवं भाषा-सुधार के लिए सुनो बोलो विधि (hear-say-Method) काफी उपयोगी है।

(v) भाषा-दोष से पीड़ित बालकों को माता-पिता, शिक्षक तथा अधिकारियों से प्रोत्साहन (encouragement), प्रशंसा (Praise) आदि मिलते रहना चाहिए ताकि वे शिक्षा की ओर प्रेरित होते रहें। Rubicheck (रूबीचेक) ने अपनी आर्टिकल "Stuttering child" में दो बातें लिखी हैं। पहली बात यह कि शिक्षकों को चाहिए कि वे ऐसे बालकों को अपने निकट बैठाएँ ताकि उनकी भाषा त्रुटियों को जान सकें तथा सुधारने का कोई उचित प्रबन्ध कर सकें। दूसरी बात यह कि, शुद्ध बोलने पर बालकों को प्रशंसा, प्रोत्साहन आदि के द्वारा अधिक से अधिक प्रेरित किया जाए। इससे यह भी होगा कि शिक्षकों में उनका विश्वास पैदा हो सकेगा और वे बिना संकोच के अपनी कठिनाइयों को शिक्षक के सामने रख सकेंगे।

इस तरह उपर्युक्त बातों पर अमल करके ऐसे बालकों की भाषा-त्रुटियों को दूर करके उनकी शिक्षा की उचित व्यवस्था की जा सकती है।

(5) शारीरिक विकलांग बालकों के सम्बन्ध में निष्कर्ष :—

विभिन्न प्रकार के शारीरिक विकलांग बालकों के शिक्षा कार्यक्रम एवं आयोजन से पूरी सफलता तभी मिल सकती है जबकि शिक्षक के अतिरिक्त बालकों के माता पिता एवं समाज के अन्य सदस्य भी इसमें सहयोग दें। बालकों को हीनता के भाव से बचाना तथा उन में यह विश्वास पैदा करना कि समाज में उनका भी वही स्थान है, जो स्थान सामान्य बालकों को प्राप्त है, शैक्षणिक दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। इसके लिए माता-पिता, शिक्षकों तथा समाज के अन्य सदस्यों को चाहिए कि वे ऐसे बालकों की निंदा न करें बल्कि यथासंभव उन्हें शिक्षा के प्रति उत्साहित एवं प्रेरित करते रहें तथा उनकी कठिनाइयों की ओर शिक्षकों एवं अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करते रहें।

भारत सरकार द्वारा वर्तमान समय में ऐसे विकलांगों को विशिष्ट शिक्षा देने तथा उन्हें नौकरी पाने तथा विभिन्न क्षेत्रों में नियुक्ति के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई है जिससे आशातीत सफलता मिल रही है।